## अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2024) दिनांक : 27.08.2024

समय सीमा : 3 घंटा तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

### नव पदार्थ (पुण्य-पाप)–50

प्र. 1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर दें– 16

**पुण्य–**किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें–

(क) शुभनाम कर्म की अंगोपांग से सम्बन्धित उत्तर प्रकृतियां लिखें।

(ख) जीव किल्विषी देव योग्य कर्म का बंध किन कारणों से करता है?

(ग) अल्प आयुष्य बंध के हेतु लिखें।

(घ) अभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग से क्या समझते हैं?

(ड़) आचार्य भिक्षु ने पुण्यजनित काम भोगों को विष तुल्य क्यों कहा?

(च) धर्मकथा से जीव क्या प्राप्त करता है?

**पाप–**किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(छ) ठाणं सूत्र में अन्तराय कर्म के कितने भेद बताये हैं?

(ज) देहादि के कारण माता-पिता प्रत्यक्ष है, फिर अदृष्ट कर्म क्यों माना जाए?

(झ) स्त्री वेद से आप क्या समझते हैं?

(ञ) ठाणं सूत्र में वेदना कितने प्रकार की बताई गई है? लिखें।

प्र. 2 निम्न प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें– 10

(क) **पुण्य–**सिद्ध करें कि पुण्य कर्म पुद्गल के विशिष्ट परिणाम प्राप्त स्कन्ध है?

***अथवा***

निदान कर्म का क्या फल होता है?

(ख) **पाप–**'पुण्य और पाप एक ही साधारण वस्तु है' इस मत का विवेचन करते हुए बतायें कि इसका खंडन किस प्रकार किया गया?

***अथवा***

आचार्य भिक्षु ने पापकर्म और पाप की करणी को भिन्न-भिन्न क्यों कहा?

प्र. 3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार पूर्वक लिखें– 24

(क) **पुण्य–**सावद्य व निरवद्य कार्य का आधार क्या है? भावना के आधार पर योग शुभ-अशुभ हो सकते हैं क्या?

***अथवा***

पौद्गलिक सुख व आत्मिक सुख में क्या अन्तर है?

(ख) **पाप–**ज्ञानावरणीय कर्म का विस्तार से विवेचन करें।

***अथवा***

क्या जीव ग्रहण काल में ही शुभाशुभ का विभाग कर कर्म ग्रहण करता है? उदाहरण से समझाएं।

## अवबोध (निर्जरा से देवगति)–30

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में लिखें– 6

(क) चौदहवें गुणस्थान में कौन सी निर्जरा मानी गई है? कैसे?

(ख) देवों के पर्याप्ति पांच ही क्यों?

(ग) ज्योतिष्क देव कहां रहते हैं?

(घ) मोक्ष में क्रिया नहीं है फिर आत्मा के भेद क्यों?

(ड़) तैजस, समुद्घात से आप क्या समझते हैं? लिखें।

(च) क्या बंध से पूर्व कर्मवर्गणा ज्ञानावरणीय आदि प्रकृतियों में विभक्त होती है?

(छ) मेरु पर्वत पर पंडुक वन में भी कोई सिद्ध हो सकता है?

(ज) सकाम व अकाम निर्जरा से क्या तात्पर्य है?

प्र. 5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्य में दें– 12

(क) क्या एकेन्द्रिय जीवों के निर्जरा होती है?

(ख) तीर्थ प्रवर्तन से पूर्व क्या कोई मोक्ष जा सकता है?

(ग) अपने आप होने वाली निर्जरा को क्या तत्त्व के अन्तर्गत माना गया है?

(घ) क्या सिद्धों की कोई अवगाहना भी है?

(ड़) व्यन्तर देव कहां रहते हैं?

(च) त्रायस्त्रिंशक देव कौन होते हैं? क्या वे सभी जाति के देवों के अन्तर्गत है?

(छ) क्या निर्जरा से मात्र अशुभ कर्म टूटते हैं?

(ज) क्या बंध आत्मा की स्वतंत्र क्रिया है?

प्र. 6 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखें– 12

(क) देवों के कितने इन्द्र हैं?

(ख) निर्जरा की परिभाषा लिखते हुए, उजला लेखे व करणी लेखे निर्जरा का स्वरूप लिखें?

(ग) वैमानिक देवलोक के विमानों की संख्या कितनी है?

(घ) महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होने के क्या अर का प्रभाव रहता है?

(ड़) क्षयोपशम के बत्तीस गुण निर्जरा जन्य है, क्या क्षायक व उपशम के गुण भी निर्जरा जन्य है?

## गीतिका (दस दान, अठारह पाप)–20

प्र. 7 कोई चार पद्य अर्थ सहित लिखें– 16

(क) जिन भाख्या.....जाणजो ए।

(ख) ऐ मिश्र.....रूढ़ में ए।

(ग) बंदी वानादिक.....खवाई नै ए

(घ) दान स्यूं.....छाणियो ए।

(ड़) पोते नहीं.....पड़ ए।

(च) पिण बांधी.....बात में ए।

प्र. 8 किन्हीं चार प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 4

(क) निर्मल करणी (क्रिया) किसे कहा है?

(ख) संसार परित कौन करता है?

(ग) अनुकम्पा दान किसे कहा गया है?

(घ) भगवान की आज्ञा में कितने व कौन से दान हैं?

(ड़) विशेष रूप से उधार दिये जाने वाला दान कौन सा है?

(च) श्रावक का पोषण करने में किसने धर्म माना?